फणीश्वर 'रेणु' की औपन्यासिक कृतियों के अंतर्गत 'मैला आंचल' का संक्षिप्त विवरण

डॉ० सुषमा पाण्डेय*

शोध सारांश –इस उपन्यास की कथा बिहार प्रांत के पूर्णिया जिले का मेरीगंज नामक एक गाँव की है। यह गाँव पिछड़ा, उपेक्षित, शोषित एवं विवश क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है। अगर देखा जाए तो इस उपन्यास के विस्तृत फलक में कहानी दो खण्डों (स्वराज्य से पहले तथा स्वराज्य के बाद) एवं सड़सठ सर्गों में विभक्त है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि रेणुजी अपने इस उपन्यास के माध्यम से स्वराज्य प्राप्ति के पहले के तथा बाद के समस्याग्रस्त भारतीय जीवन (मुख्यतः ग्रमीण) के आत्म–संघर्ष की बड़ी ही मार्मिक चित्र उपस्थित करने का सफल प्रयास किया है।

कुँजी शब्द – आंचलिक, उपन्यास, उत्कर्ष अध्याय आदि।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' के आविर्भाव से उपन्यास जगत् में एक नयी क्रांति हुई। उनका 'मैला आंचल' हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास कहलाया और इसमें तनिक संदेह नहीं कि यह 'आंचलिक नाम रेणु का दिया हुआ है। इसके बाद इस दिशा में प्रयास करने वाले कई रचनाकार हुए, परंतु जितनी ख्याति रेणुजी को मिली, उतनी किसी और को नहीं। इसका कारण केवल यह नहीं कि उन्होंने उपन्यास रचना में नये प्रयोग की शुरुआत की थी, बल्कि उन्होंने जिस प्रयोग की शुरुआत की, उसे अपनी उसी रचना में शीर्ष पर पहुँचा दिया।

आंचलिक उपन्यास के इतिहास में उत्कर्ष का अध्याय रेणु जी के 'मैला आंचल' से ही आरंभ होता है। हाँलाकि रेणुजी से पूर्व नागार्जुन का आंचलिक उपन्यास 'बलचनामा' हिन्दी में अपनी प्रसिद्धि बना चुका था और रेणुजी भी इस क्षेत्र में नागार्जुन को अपना अग्रज मानते हैं। फिर भी जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि जो स्वरुप आंचलिकता का 'मैला आंचल' में ऊभरा है, वह हिन्दी उपन्यास जगत की ऐतिहासिक उपलब्धि है। इतना तो स्पष्ट है कि इनकी रचनाओं में मिट्टी की सोंधी गंध है, गाँवों आंचलों की जीती–जागती तस्वीर है।

***पी० जी० टी० हिन्दी राजकीयकृत ग्रामीण उच्च माध्यमिक (+2) विद्यालय चकबैरीया पटना–07**

'मैला आंचल' इनकें द्वारा रचित एक ऐसी ही वृहत् उपन्यास है। यह उनका प्रथम उपन्यास है, जो सन् 1954 ई० में समता– प्रकाशन, पटना–4, द्वारा प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के माध्यम से 'रेणु' जी को जो यश और प्रसिद्धि मिली, वह अद्वितीय है। यह वह कृति है, जिसने हिन्दी–साहित्य में एक नयी विधा को जन्म दिया और अपने रचयिता को अमर बना दिया।

'यह है मैला आंचल, पर आंचलिकता पर आधारित आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णियाँ। रेणुजी ने कहा है– ''मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर – इस उपन्यास–कथा का क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चंदन भी है, सुंदरता भी है, कुरुपता भी– मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''

इन शब्दों के साथ रेणु जी ने अपने उपन्यास की शुरुआत की है। स्पष्ट है कि एक गाँव की कहानी है और है – यहाँ के लोगों के प्रति 'रेणु जी' का असीम प्यार।

'मैला आंचल' में पात्रों की विविधता है वे समाज के सभी वर्गो के हैं। मुख्य कथा को गति देने के लिए अथवा आगे बढ़ाने के लिए इसमें अनेक छोटी–छोटी कहानियों का सहारा लिया गया है, जैसे सेवादास और लक्ष्मी, रामदास और रामपिपरिया, खलासी और फूलिया इत्यादि। उपन्यास का प्रत्येक पात्र जीवन्त और अपने अंचल की मिट्टी से महक रहा है। आंचलिक ग्रंथ उनमें विद्यमान है। स्वभाव में सरलता व अवोधता के साथ–साथ ग्रामीण संस्कारों का पूर्ण प्रभाव है। कुछ पात्रों पर राजनैतिक प्रभाव भी है। कारण था, यद्यपि 'मैला आंचल' का प्रकाशन 1954 ई० में हुई, परंतु उपन्यास की कहानी का श्री गणेश सन् 1942 ई० के जन–आंदोलन की पृष्ठभूमि में किया गया है। अगर देखा जाए तो ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह समय हमारे देश के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था। उस समय चारों तरफ अंग्रेजी साम्राज्य व्याप्त थी और आंदोलनकारी अपने देश को आजाद कराने के लिए दृढ़ संकल्प थे। एक तरफ हमें अपने बलिदान मिल गयी; परंतु मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं नैतिक दृष्टि से अभी भी हम गुलाम हैं। इसका खेद कथाकार रेणु को भी था। चुंकि हमारा देश गाँवों का देश है, यहाँ की आत्मा गाँवों में बसती है, परंतु हमारा गाँव आज भी अशिक्षा, अंधविश्वास, आर्थिक पिछड़ापन, शोषण आदि के घोर अंधकार में जीवित है। इस उपन्यास का कथांचल 'मेरीगंज' ऐसी ही लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। रेणुजी अपनी सूझ–बुझ द्वारा कैमरे की भांति बिहार के इस छोटे से भूखण्ड की हथेली पर समूचे भारत के गाँवों एवं वहाँ निवास करने वाले किसानों की नियती उजागर करने की सफल प्रयास किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में मेरीगंज के जन–जीवन का यथार्थ–चित्रण हुआ है। यहाँ के निवासी रुढ़िवादिता तथा धर्मान्ध हैं। किसानों पर अत्याचार, मठों का आडम्बर, अन्याय का सर्मथन, भेद–भाव, स्वार्थसिद्धि आदि का बखूबी चित्रण है। इस उपन्यास के संबंध में विभिन्न विद्वानों की अपनी–अपनी दृष्टि है, जैसे श्री नेमीचंद का कहना है – 'इसमें मिथिला के बदलते हुए आज के गाँव की आत्मा है, जो सदियों से सोते–सोते जागकर अँगड़ाई ले रही है।' डॉ० रामदरस मिश्र स्वीकार करते हैं कि – 'हिन्दी में पहली बार किसी कुरुपता, सीमा, विवशता ओर सम्भावना को इतनी मानवीय ममता और सूक्ष्मता का रुप दिया गया है।

यह उपन्यास अंचल विशेष के समग्र जीवन यथा–उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति, उसकी आशा–निराशा, उसके विश्वास–अविश्वास, रहन–सहन, रीति–रिवाज, वेश–भूषा, बोली–भाषा, पर्व–त्योहार आदि से रु–ब–रु कराता है। रेणुजी ने इस जीवन को बहुत करीब से देखा, सुना, जाना, और भोगा है और यही कारण है कि इसका चित्रण उन्होंने यर्थाथ के धरातल पर कर दिया। चुँकि ऐसे उपन्यास में नायक कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा अंचल होता है, अतः इसे नायक विहीन उपन्यास की संज्ञा भी दी गयी और मोटे तौर पर मेरीगंज गाँव को ही मान लिया गया। ध्यातव्य यह है कि अंचल विशेष की कथा करते हुए यह उपन्यास पूरे भारत के गाँवों का भी चित्र प्रस्तुत करता है।

लेखक मेरीगंज गाँव की भौगोलिक स्थिति का विवरण देते हुए सामाजिक स्थिति का चित्रण करते हैं। गाँव में अनेक जातियों, स्तरों व वर्गों अथवा यों कहे कि 'बारहो बरन' के लोग रहते हैं। परंतु प्रमुख रुप से तीन ही जातियाँ हैं – कायस्थ, राजपूत तथा यादव। ब्राह्मण व संथाल भी हैं परंतु परस्पर सभी लड़ते रहते हैं। अतः मेरीगंज के दुग्ध धवल आँचल का वर्णन यहाँ उपलब्ध नहीं होता अपितु मटमैले और दागदार जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है। उक्त बातों से स्पष्ट है कि गाँव में कई वर्ग एवं वर्ण के लोग रहते हैं और मनमुटाव हमेशा बनी रहती है। गाँव में लगभग दस पढ़े–लिखे आदमी है और नये पढ़ने वालों की संख्या भी लगभग पन्द्रह है। गाँव की मुख्य पैदावार धान, पाट और खेसारी है। रएबी भी कभी–कभी अच्छी हो जाती है।

मेरीगंज मठ का महंथ है – सेवादास। उसका संबंध लछमी कोठारिन से है। लछमी कोठारिन एवं अनेक ऐसे नारियों के माध्यम से लेखक ने जहाँ नारी–चरित्रों को दिखलाया है, वहीं असकी विवशता को भी बखूबी दर्शाने की कोशिश की है। लछमी गाँव की हर स्थिति में ढल गई है। तथा एक–एक आदमी की पहचान रखती है। शास्त्र–पुराण की बात कहती है, दोहा–कविता कहती है अैर विकट परिस्थिति में भी शांत–चित बनी रहती है। हम कह सकते हैं कि 'मैला

आँचल' की मूल धारणा किसी व्यक्ति के पूर्ण जीवन के स्थान पर एक गाँव अथवा अँचल विशेष के जीवन को प्रस्तुत करना है।

निष्कर्षः– इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि इस उपन्यास में बहुआयामी चित्र उपस्थित हुए हैं। जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है, जिसे लेखक ने अछूता छोड़ा हो। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि आंचलिक कथाकार का जीवन–दर्शन अन्य कथाकारों से भिन्न होता है। इनमें स्वातन्ध्योत्तर कालीन भारत के टुटते हुए गाँव की व्यथा है। आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक सभी परिप्रेक्ष्यों में मेरीगंज के गाँव के व्यक्तियों को उभारने का प्रयास किया गया है। इस उपन्यास के प्रायः सभी पात्र खेतों में काम करने वाले, अशिक्षित, सीधे–साधे, जमींदारों के हथकडों के शिंकार होनेवाले, दूसरे की सहानुभुति पर पलनेवाले अनेक जातियों और उपजातियों में विभाजित हैं। मेरीगंज क्षेत्र की कथा कहना मात्र लेखक का उद्देश्य नहीं है अपितु उसके माध्यम से युग–युगांतर से चली आ रही ग्रामीण स्थिति का चित्र उपस्थित करना है। यह सम्पूर्ण भारत की गाँव की सभ्यता व संस्कृति की गाथा को कहता है। इसके अतिरिक्त सतारुढ़ दल राजनीतिक व सामाजिक संस्थाओं का सच रुप भी मुखर हुआ है। इतना तो अवश्य है कि यह उपन्यास किसी व्यक्ति–विशेष के जीवन को चित्रित न कर गाँव की समस्या को लेकर चला है।

अतः कुछ बातों को छोड़कर, यदि देखा जाए तो सर्वकल्याणमयी दृष्टि 'मैला आँचल' हमारे सामने आयी है। उनका विश्वास है कि जब–तक निर्धनता, अज्ञान अंधविश्वास, दलगत राजनीति के अंधकार में भटकती मानवता को व्यार का संदेश नहीं दिया जायेगा, तब–तक इनके मुरझाए होठों पर मुस्कुराहट नहीं लौटेगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. 'मैला आँचल' – फणीश्वरनाथ रेणु
2. फणीश्वरनाथ रेणु : सृजन और संदर्भ, डॉ. अशोक कुमार आलोक
3. परिषद्–पत्रिका वर्ष 41, अंक 2/3

******